हिन्दी पत्रकारिता के समक्ष चुनौतियाँ

*डॉ अनिल अग्रवाल

भारत में हिन्दी पत्रकारिता का आरम्भ हुए 170 वर्ष हो चुके हैं। इन वर्षों में हिन्दी पत्रकारिता ने अपने विविध सोपानों को पार करते हुए देश और समाज को नई दिशा दी है। विभिन्न कठिनाइयों से निकल कर जिस मुकाम पर आज हिन्दी पत्रकारिता खड़ी है वह दूर से एक चमकते तारे के समान लगती है लेकिन यदि वास्तव में इसका गहन अध्ययन किया जाये तो पता चलता है कि आज हिन्दी पत्रकारिता के समक्ष बहुत सी कठिनाइयाँ चुनौती बनकर खड़ी है। हिन्दी पत्रकारिता के सामने वे कौन सी चुनौती है जो इसके आगे के मुकाम पर पहुंचने में रुकावट बनी हुई है?

हिन्दी पत्रकारिता को मूल रूप से उन्हीं सब समस्याओं का सामना करना पड़ रहा जो अन्य भाषाओं की पत्रकारिता के समक्ष है। परन्तु उसकी कुछ अपनी पराई है पिछले 170 वर्षों का इतिहास है, अपने मापदण्ड है जिनको कायम रखना प्राचीन पाती को सुरक्षित रखना उसका एक मुख्य कर्तव्य हो जाता है। "इस दृष्टि से हिन्दी पत्रकारिता के समक्ष सबसे बड़ा प्रश्न भाषा का है। जिस भाषा को पत्रकार लिखता है वह भाषा बोलने की दृष्टि से संसार की तीसरी भाषा है। हिन्दी भाषा के पत्र भारत के 22 राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों से प्रकाशित होते हैं। "[1]

भारत में जो लिखा जाता है वह अन्य देशो की जनता में भी पढ़ा जाता है। "हिन्दी का यह विस्तार, हिन्दी का यह आकार जहाँ उसकी पत्रकारिता को असीम शक्ति देता है, वहाँ पर पत्रकारों को एक बन्धन में भी डाल देता है। उन पर ऐसी मर्यादाएँ आरोपित कर देता है, जिससे वह निकल नहीं सकता।"[2] दूसरी भाषा के पत्र अन्य क्षेत्रों की यदि खबरें प्रकाशित करते हैं तो इससे उसकी लोकिप्रयता बढ़ती है।किन्तु हिन्दी का पत्र ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि हिन्दी पत्रकार इस बात को जानता है कि वह जो कुछ लिख रहा है वह उस भाषा क्षेत्र में भी पढ़ा जाएगा जिस क्षेत्र के लिए वह लिख रहा है। इससे उस पर प्रतिक्रिया भी होगी जबकि अन्य भाषा वाले यह समझते हैं कि कुछ भी लिखे जाओ, उनकी भाषा के पाठक तो उसे पसन्द करेंगे और दूसरी भाषा वाले इसे पढ़ नहीं सकेंगे। यह तथ्य हिन्दी पत्रकारिता को अपने आप मर्यादित कर देता है।

"किन्तु जहाँ तक राष्ट्रीयता का प्रश्न है, वह हिन्दी पत्रकारिता की छुट्टी में है। पहला हिन्दी पत्र कलकत्ता से निकला था। कलकत्ता उस समय भारत की राजधानी थी और यह स्वाभाविक ही था कि 'उदन्त मार्त्तण्ड' का वहाँ से ही उदय होता है। हिन्दी क्षेत्रों के उत्साही लोग उस समय वहाँ भौगोलिक कठिनाइयों का सामना करते हुए कलकत्ता में काफी मात्रा में बसे हुए थे। उसी समय हिन्दी का प्रथम दैनिक समाचार सुधावर्षण' कलकत्ता से ही बाबू श्यामसुन्दर सेन ने निकाला था। "[3] स्पष्ट है कि "हिन्दी पत्रकारिता अहिन्दी क्षेत्रों में पनपी, ऐसे लोगों ने उसका सम्पादन और प्रकाशन किया जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं थी और जिनके सामने हिन्दी एक माध्यम था, एक साधन अपने विचारों को जनता तक पहुंचाने के लिए। इसका परिणाम यह हुआ कि हिन्दी पत्रकारिता प्रारम्भ से ही क्षेत्रीयता, प्रान्तीयता और धार्मिक संकीर्णता के बन्धन से मुक्त हो गई। "[4]किन्तु आज की स्थिति का अवलोकन करें तो यह साफ दृष्टिगोचर होता है कि आज पत्रकारिता क्षेत्रीयता और प्रान्तीयता के चंगुल से नहीं निकल पा रही है। दिल्ली से निकलने वाले पत्रों की बात छोड़ दें तो देखा यह जाता है कि जिस प्रदेश से पत्र का प्रकाशन हो रहा है वह उस क्षेत्र से आगे निकल ही नहीं पाता है। दिल्ली से प्रकाशित समाचार पत्र भी केवल हिन्दी भाषी क्षेत्रों से ही निकलते है। किन्तु इस दिशा में राजस्थान से प्रकाशित प्रमुख समाचार पत्र 'राजस्थान पत्रिका का प्रयास प्रशंसनीय कहा जा सकता है कि उसने अहिन्दी भाषी क्षेत्र बैंगलोर से राजस्थान पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया। हिन्दी में कदाचित् यह किसी भी समाचार पत्र का पहला उदाहरण है कि उसने अहिन्दी भाषी क्षेत्र से हिन्दी का पत्र निकालने का दुःसाहस किया हो।

हिन्दी पत्रकारिता के समक्ष एक चुनौती पत्रों के सम्पादकों को लेकर भी प्रकट की जाती है। पहले जब भारतेन्दु जैसे पत्रकार पत्रों के सम्पादक हुआ करते थे तब सम्पादक अखबार के बारे में सम्पूर्ण जानकारी रखते थे।" किन्तु जब से पत्रकारिता की दुनिया में पूंजीपतियों का प्रवेश हुआ है तब से पत्र के सम्पादक उस समूह के अध्यक्ष होने लगे हैं। '[5]

"अब सवाल यह है कि आज कितने लोग जो अपने को हिन्दी पत्रों को सम्पादक कहते हैं, हिन्दी अखबारों की परम्परा से परिचित है। अगर आँख बन्द कर प्रेस रजिस्ट्रार की सूची में वर्णित हिन्दी पत्रों की गणना कर ली जाए और उसमें जिन लोगों का नाम सम्पादक में लिखा है, उनको ही सम्पादक मान लिया जाए तो पता चलेगा कि उनमें से अधिकांश ने कहीं भी पत्रकारिता या सम्पादन का 'क ख ग' भी नहीं पढ़ा है। वे मालिक है, इसलिए सम्पादक है। "[6]वस्तुत: आज यदि पत्रकारिता या पत्रों के मापदण्ड गिर रहे हैं, तो उसका प्रधान कारण यह है कि "जिनके ऊपर पत्रों के संचालन का दायित्व है, वे पत्रों का मुनाफा कमाने, मंत्रियों तक पहुँचने या सत्ता के स्रोत से अधिक कोई महत्त्व ही नहीं रखते"।[7]

पत्रों के सम्पादक जब उस समूह के मालिक होने लगे हैं तब आज पत्रकारों में विशेष तौर पर देशी भाषा के पत्रकारों में यह संत्रास की भावना पैदा हो गई है कि वे कितने ही अच्छे पत्रकार क्यों न हों, वे वर्तमान व्यवस्था में किसी पत्र के सम्पादक नहीं हो सकते। "यह पत्रकारिता का ऐसा रोग है जिसके कारण 'प्रताप और सैनिक' जैसे पत्र बंद हो गए और जो पुराने-पुराने प्रतिष्ठित पत्र बंद नहीं हुए हैं, यानी नाम मात्र को जिन्दा है, वे अपनी चमक खो-खो बैठे । आज भी वे ही पत्र प्रतिष्ठित है जिनके पत्र स्वतन्त्र हैं या कम से कम जिन्होंने पत्रकारिता का कोई अनुभव प्राप्त किया है।"[8] यह हिन्दी पत्रकारिता के सामने एक विशाल चुनौती है जिसे खत्म किया जाना चाहिए।

"अगर यह प्रवृत्ति कि वास्तविक पत्रकार ही पत्र का सम्पादक हो तो इस सुधार का एक लाभ यह भी होगा कि हिन्दी पत्रों की जो बहुत बड़ी संख्या है उस पर भी काबू पाया जा सकता है। अगर आज हिन्दी पत्र अन्य भाषाओं की तुलना में कम बिकते हैं तो उसका सबसे बड़ा कारण यह है कि उनकी इतनी संख्या है कि विशाल ग्राहक समुदाय बंट जाता है। आज देखा यह जाता है कि एक छोटे से नगर में चार या छ: दैनिक पत्र होंगे, दस-बीस साप्ताहिक और उतने ही मासिक होंगे तो वह छोटा सा नगर उनको संरक्षण दे नहीं सकता और बड़े-बड़े राष्ट्रीय पत्रों के सामने ये छोटे पत्र मुकाबला नहीं कर सकते। "[9] छोटे और मझोले पत्र हैं कुछ दिनों के बाद बंद हो जाते हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि इन छोटे और मध्यम श्रेणी के पत्रों को सरकार संरक्षण दे जिससे ये भी पत्रकारिता को कोई दिशा दे सकें। बार-बार पत्रों का आरम्भ होना और बंद होना भी हिन्दी पत्रकारिता के समक्ष चुनौती से कम नहीं है।

हिन्दी पत्रकारिता के समक्ष एक चुनौती यह भी है कि बड़े-बड़े पत्र आज किसी न किसी राजनीतिक दल को अपना समर्थन देते हैं। इससे पत्रकारिता में अथवा उनके समाचारों में निष्पक्षता नहीं रह पाती है। देखा यह जाता है कि चुनावों के समय वे पत्र अपनी पार्टी के प्रचार के लिए उन तथ्यों को तोड़मरोड़कर पेश करते हैं जो विपक्षी पार्टी के लिए लाभकारी हो सकते हैं। इन पत्रों में प्रकाशित सामग्री पाठकों को सही खबरें नहीं दे पाती जिसकी वह आशा करता है। राजनीतिक पार्टी को समर्थन देने के कारण पत्रों को विज्ञापन तो मिलते ही हैं साथ में अपने कार्यों को कराने में भी आसानी होती है। आज इस चुनौती को भी खत्म करने की आवश्यकता है।

"भाषा संवाद और उसके अनुवाद की समस्या भी हिन्दी पत्रकारिता के समक्ष एक चुनौती है। सबसे बड़ी विडम्बना तो यह है कि समाचार पत्रों को समाचार प्रदान करने वाली प्रमुख समाचार समितियाँ अपनी सेवाएँ अंग्रेजी के माध्यम से प्रदान करती है। अंग्रेजी पत्रों के विज्ञापन की दरें भाषायी पत्रों की विज्ञापन दरों की अपेक्षा अधिक है और उन्हें विज्ञापन भी भारी मात्रा में मिलते हैं। इस कारण वे देश

और विदेश में अपने संवाददाता रखते हैं,

उनके टेलीप्रिन्टर अंग्रेजी में चलते हैं और उन अंग्रेजी पत्रों के साथ-साथ छपने वाले भारतीय भाषाओं के पत्रों को भी देशी तथा विदेशी सेवाओं के लिए उन अंग्रेजी पत्रों के साधनों पर अवलम्बित रहना पड़ता है।"[10] इसका एक दुष्परिणाम यह होता है कि मौलिक लेखन की प्रवृत्ति निरुत्साहित होती है और अनुवाद करने की योग्यता भारतीय भाषाओं के पत्रकारिता के लिए उपयोगी और अनिवार्य समझी जाती है। अनुवाद पर आधारित होने के कारण भारतीय भाषाओं के पत्र अंग्रेजी भाषा के पत्रों के साथ जो स्पर्धा करते हैं, उसमें उन्हें कठिनाई होती है।

समाचार पत्र में समाचार प्राप्त होने और प्रकाशित होने में जितना समय और परिश्रम अंग्रेजी पत्र में लगता है, उससे कहीं अधिक समय और परिश्रम भारतीय भाषाओं के पत्रों में लगाना पड़ता है। इसके दो परिणाम होते हैं या तो मात्रा की दृष्टि से भाषायी पत्र अंग्रेजी पत्रों के साथ बराबरी नहीं कर पाते या समय में पिछड़ जाते हैं जिसका भाषायी पत्रों के प्रसार-प्रभाव और आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल असर पड़ता है। 76 हिन्दी पत्रकारिता के सामने यह बड़ी चुनौती है।

उपर्युक्त विश्लेषण के अनुशीलन के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हिन्दी पत्रकारिता के अस्तित्व के समक्ष ढेर सारी चुनौतियाँ खड़ी है। ये चुनौतियाँ जहाँ हिन्दी पत्रकारिता के मार्ग में रुकावट बनी हुई है वहाँ अंग्रेजी पत्रकारिता दिनों-दिन प्रगति की ओर अग्रसर होती जा रही है। इसका मुख्य कारण अंग्रेजी का अन्तर्राष्ट्रीय भाषा होना है साथ ही इसके विज्ञापनों की दरें अधिक होना है। हिन्दी पत्रकारिता मुख्यतः 7 हिन्दी प्रदेशों पर आश्रित है। फिर इसका क्षेत्र भी कम है साथ ही सरकार से मिलने वाले विज्ञापनों की दरें भी कम है जिसके कारण आज छोटे और मझले पत्रों के सामने संकट खड़े हो गए हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि सब मिलकर इन चुनौतियों का सामना करें।

***सहायक आचार्य हिंदी**
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
हिंडौन सिटी

संदर्भ सूची

1. जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी--- पत्रकारिता के परिपेक्ष्य, पृष्ठ 174
2. एन सी पंत ----हिंदी पत्रकारिता का विकास, पृष्ठ 263

3. अर्जुन तिवारी ---हिंदी पत्रकारिता का वृहद इतिहास पृष्ठ 107
4. राजकिशोर ---समकालीन पत्रकारिता, पृष्ठ 140
5. जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी--- पत्रकारिता के परिपेक्ष, पृष्ठ 181
6. वही ,पृष्ठ 181
7. वही, पृष्ठ 182
8. मीरा रानी बल ---नवजागरण हिंदी पत्रकारिता,पृष्ठ 79
9 डॉ. प्रेमचंद गोस्वामी--- पत्रकारिता के प्रतिमान, पृष्ठ 104
10 . जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी--- पत्रकारिता के परिपेक्ष, पृष्ठ 199